पहल छोटी उम्मीद बड़ी

डॉ. शम्भुनाथ सिंह रिसर्च फाउण्डेशन

संकलन

के सन्दर्भ में.....

यूँ तो औरतो की जिन्दगी में हर रोज एक नया सवेरा होता है, उनकी नयी उम्मीदों के साथ। जिन्दगी की कशमकश, हरपल झेलती कठिनाईयॉ एवं कुरीतियों का सामना करते हुए आज भी हम कह सकते है कि औरतो को बस एक अवसर मिल जाए, तो न केवल अपनी बल्कि समाज की तस्वीर भी बदल सकती हैं। जरूरत है हमारी पहल, हमारी सोच को समय–समय पर दिशा देने की और आगे लाने की।

ऐसा ही कुछ है इस ''पहल छोटी, उम्मीदें बड़ी'' संकलन में। सन्त रविदास नगर भदोही के औराई ब्लाक के 34 गॉव के डॉ. शम्भुनाथ सिंह रिसर्च फाउण्डेशन एवं प्लान इण्डिया के सहयोग से गठित महिला संगठनों के पहल व प्रयासों को सम्मान दिया गया है, जो पढ़ने व देखने में छोटा अवश्य दिख सकता है, किन्तु उसका असर बहुत दूरगामी परिणाम वाला होगा यह निश्चित है। महिलाओं की इन भावनाओं को संजोने एवं जन–जन तक पहुॅचाने हेतु यह दस्तावेज आप पाठकों के सम्मुख पहुॅचाने का प्रयास किया जा रहा है। आशा करती हूॅ कि यह दस्तावेज महिला सशक्तिकरण की दिशा में मील का वह पत्थर साबित होगा, जो आने वाले समय में महिलाओं के लिए एक मार्गदर्शन देने का काम करेगी।

डॉ. रोली
कार्यक्रम निदेशक
डॉ. शम्भुनाथ सिंह रिसर्च फाउण्डेशन

सामूहिक पहल

कभी-कभी छोटे बच्चों की बात इस कदर असर कर जाती है कि बड़े भी उनसे सीख कर कुछ अच्छा असर कारी काम कर जाते हैं।

ऐसा ही नकटापुर गांव में हुआ। दरअसल गांव में एक बैठक हुई स्वच्छता, जल एवं पर्यावरण संरक्षण विषय पर। हमारे गांव के छोटे–छोटे बच्चे, जिससे जो बन पड़ता वो अपने–अपने ढ़ंग से सीखे विषय को व्यवहारिक जीवन में उतार रहा था। कुछ बच्चे पेड़ लगा रहे थे तो कुछ अपने घर आंगन साफ कर रहे थे। मेरे जैसे लोग जो कभी बच्चों की भावनाओं को सम्मान नहीं देती थी, बच्चों से पूछ बैठी कि पढ़ाई–लिखाई छोड़कर ये सब क्या कर रहे हो ? बच्चों की वह टोली जो शाम को मिलकर साथ पढ़ते थे, और साथ में अन्य सामुहिक कार्य भी करते थे सबने एक के बाद एक मुझे सुनाना शुरु किया। पढ़ाई–लिखाई का मतलब सिर्फ अक्षर ज्ञान नहीं है, आप बड़े लोग जो खाली समय में सिर्फ एक दूसरे की शिकायतों में समय बेकार करती हैं। उससे कहीं बेहतर तो हम बच्चे है जोकि कुछ नया काम हैं। उनकी बातों ने मेरे दिल को ऐसा छुआ कि तभी मैने घण्टे भर के अन्दर अपनी समूह की महिलाओ की बैठक की और अपनी बात रखी कि जब हमारे गांव के छोटे–छोटे बच्चे अच्छी बातें सीखकर अपने जीवन में उतार सकते हैं, तो हम बड़े क्यों नहीं कुछ सामुहिक सार्थक पहल करते है।

बात उठी तो कई कार्य निकलकर आए की हम अपने गांव में क्या–क्या कर सकते है। सबसे पहला जरुरी कार्य जो निकलकर आया वो ये था कि हमारी बस्ती तक पक्की सड़क, पक्की नाली तो बन गई है,

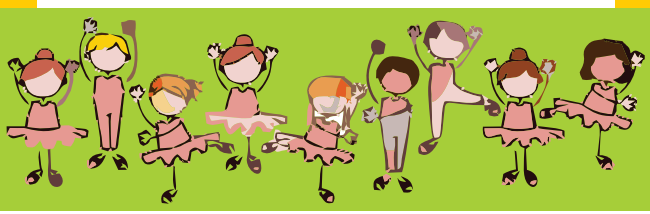

ऐसा ही नकटापुर गांव में हुआ। दरअसल गांव में एक बैठक हुई स्वच्छता, जल एवं पर्यावरण संरक्षण विषय पर। हमारे गांव के छोटे–छोटे बच्चे, जिससे जो बन पड़ता वो अपने–अपने ढ़ंग से सीखे विषय को व्यवहारिक जीवन में उतार रहा था। कुछ बच्चे पेड़ लगा रहे थे तो कुछ अपने घर आंगन साफ कर रहे थे। मेरे जैसे लोग जो कभी बच्चों की भावनाओं को सम्मान नहीं देती थी, बच्चों से पूछ बैठी कि पढ़ाई–लिखाई छोड़कर ये सब क्या कर रहे हो ? बच्चों की वह टोली जो शाम को मिलकर साथ पढ़ते थे, और साथ में अन्य सामुहिक कार्य भी करते थे सबने एक के बाद एक मुझे सुनाना शुरु किया। पढ़ाई–लिखाई का मतलब सिर्फ अक्षर ज्ञान नहीं है, आप बड़े लोग जो खाली समय में सिर्फ एक दूसरे की शिकायतों में समय बेकार करती हैं। उससे कहीं बेहतर तो हम बच्चे है जोकि कुछ नया काम हैं। उनकी बातों ने मेरे दिल को ऐसा छुआ कि तभी मैने घण्टे भर के अन्दर अपनी समूह की महिलाओ की बैठक की और अपनी बात रखी कि जब हमारे गांव के छोटे–छोटे बच्चे अच्छी बातें सीखकर अपने जीवन में उतार सकते हैं, तो हम बड़े क्यों नहीं कुछ सामुहिक सार्थक पहल करते है।

बात उठी तो कई कार्य निकलकर आए की हम अपने गांव में क्या–क्या कर सकते है। सबसे पहला जरुरी कार्य जो निकलकर आया वो ये था कि हमारी बस्ती तक पक्की सड़क, पक्की नाली तो बन गई है, लेकिन हमारे घरों के कचरे उन नालियों में जाकर इस तरह जाम हो गये हैं कि बरसात होते ही जल जमाव हो जाता है और पूरी बस्ती जल जमाव के कारण अस्त–व्यस्त। हमने चूंकि श0रि0फा0–प्लान के दीदी भैया के द्वारा जल जमाव और उससे होने वाली

यह भी एक सच

उमरहाँ गाँव की रहने वाली रीता देवी, जिन्हें चार बेटियाँ, सबसे बड़ी 14 वर्ष और सबसे छोटी 5 वर्ष की है। इनका विवाह मनोज दूबे से हुआ था। छोटी बिटीया अभी गर्भ में ही थी, तभी पति की मृत्यु हो गई। पति की मृत्यु सड़क दुर्घटना में हो गई। पति के मृत्यु के बाद से अब तक जिस किसी तरह अपना तथा अपनी बच्चियों का भरण पोषण करती आ रही रीता देवी के धैर्य का बाँध तब टूट गया, जब उसकी अबोध बेटी को उनके ससुर ने जलते आग में झोंक दिया। बिटिया का पैर पूरी तरह से जल गया और इलाज को एक रूपए तक नहीं था। रोती बिलखती रीता देवी अपनी पीड़ा को अपने समूह की सखियों से कहा। सबने मिलकर न केवल इलाज करवाया, बल्कि तात्कालिक भोजन की भी व्यवस्था कराई और दबे पाँव रीता की पीड़ा को गाँव के अन्य लोगो तक भी पहुँचाया। रीता और उसके बच्चों की मदद में गाँव के युवा भी शामिल हो गए।

दरअसल रीता के पति के मृत्यु के बाद उसे विधवा पेंशन के साथ दुर्घटना राहत कोष भी कथित तौर पर प्राप्त हुआ था। किन्तु रीता के अनुसार–''पति की मृत्यु के बाद मैं सालों तक बदहाल रही मुझे कुछ भी नहीं मालूम कि कहाँ क्या हो रहा है। यहाँ तक कि मैं यह जानती हूँ कि मेरे नाम से मेरे खाते में सरकारी लाभ प्राप्त हुआ है, लेकिन सच ये है की मुझे एक रूपया भी प्राप्त नही हुआ''। यह पूरी प्रक्रिया और घटना निश्चित तौर पर बहुत संवेदनशील रही, किन्तु समूह की महिलाओं ने इस महिला और बच्चियों की मदद से समस्या को न सिर्फ पीछे छोड़ा बल्कि जहाँ जिस स्तर पर जरूरत पड़ी सब उसके साथ लगे रहे।

हम भी अपने बच्चे को दे सकते हैं

पोषक आहार

त्रिलोकपुर गांव में 90 प्रतिशत परिवार भूमिहीन है। इन परिवारों के पास रहने के छोटी–छोटी झुग्गी–झोपड़ियाँ मात्र हैं और खेती करने के लिए जमीन नहीं है। इनकी परिस्थिति को देखते हुए इन्हें बाल केन्द्रित सामुदायिक विकास परियोजना के तहत Landless Kitchen Gardening का प्रशिक्षण दिया गया। आज उस समुदाय की महिलाएँ बड़ी तादाद में संदकसमे Kitchen gardening की प्रक्रिया को अपने झोपड़ी/कच्चे मकानों में अपनाया है। इस प्रशिक्षण का आयोजन यह ध्यान में रखते हुए किया गया था कि इस समुदाय में कुपोषण एक समस्या है और जमीन नहीं होने कारण वो अपनी आवश्यकताओं के लिए साग सब्जी नहीं उगा सकते । बाजार में सब्जियाँ महँगी होने के कारण वे लोग खरीद पाने में असक्षम होते हैं और अपने परिवार खास तौर पर बच्चों को उनके शारिरिक विकास के लिए अतिमहत्वपूर्ण पोषक तत्व नहीं दे पाते। प्रशिक्षण के बाद महिलाएं एवं किशोरियाँ अपने घर के अन्दर ही बोरे में अपने इच्छा व मौसम के अनुसार साग सब्जी उगा सकती हैं।

जब जब समुदाय में Landless kitchen gardening की योजना के बारे में लोगों को बताया तो लोगों के बीच से मिली–जुली प्रतिक्रिया मिली। कुछ लोगों ने कुछ आशंकाए भी जताई कि कैसे घर– आंगन के अन्दर हम पौधे लगा सकते हैं ? क्या पौधे लगाने के बाद उनका विकास समुचित रुप से हो पाएगा ? क्या झाड़ वाले पौधे लगाने पर उनके बड़े होने पर समस्या नहीं होगी ? लेकिन प्रशिक्षण के दौरान उनके सभी प्रश्नों और जिज्ञासाओं का उत्तर मिल गया।

प्रशिक्षण के बाद सभी ने अपने–अपने घरों में

त्रिलोकपुर गांव में 90 प्रतिशत परिवार भूमिहीन है। इन परिवारों के पास रहने के छोटी–छोटी झुग्गी–झोपड़ियाँ मात्र हैं और खेती करने के लिए जमीन नहीं है। इनकी परिस्थिति को देखते हुए इन्हें बाल केन्द्रित सामुदायिक विकास परियोजना के तहत Landless Kitchen Gardening का प्रशिक्षण दिया गया। आज उस समुदाय की महिलाएँ बड़ी तादाद में संदकसमे Kitchen gardening की प्रक्रिया को अपने झोपड़ी/कच्चे मकानों में अपनाया है। इस प्रशिक्षण का आयोजन यह ध्यान में रखते हुए किया गया था कि इस समुदाय में कुपोषण एक समस्या है और जमीन नहीं होने कारण वो अपनी आवश्यकताओं के लिए साग सब्जी नहीं उगा सकते । बाजार में सब्जियाँ महँगी होने के कारण वे लोग खरीद पाने में असक्षम होते हैं और अपने परिवार खास तौर पर बच्चों को उनके शारिरिक विकास के लिए अतिमहत्वपूर्ण पोषक तत्व नहीं दे पाते। प्रशिक्षण के बाद महिलाएं एवं किशोरियाँ अपने घर के अन्दर ही बोरे में अपने इच्छा व मौसम के अनुसार साग सब्जी उगा सकती हैं।

जब जब समुदाय में Landless kitchen gardening की योजना के बारे में लोगों को बताया तो लोगों के बीच से मिली–जुली प्रतिक्रिया मिली। कुछ लोगों ने कुछ आशंकाए भी जताई कि कैसे घर– आंगन के अन्दर हम पौधे लगा सकते हैं ? क्या पौधे लगाने के बाद उनका विकास समुचित रुप से हो पाएगा ? क्या झाड़ वाले पौधे लगाने पर उनके बड़े होने पर समस्या नहीं होगी ? लेकिन प्रशिक्षण के दौरान उनके सभी प्रश्नों और जिज्ञासाओं का उत्तर मिल गया।

प्रशिक्षण के बाद सभी ने अपने–अपने घरों में landless kitchen gardening की शुरुआत की और उसकी सफलता देखकर लोगों की रुचिं landless kitchen gardening में बढ़ने लगी। शुरु–शुरु में मात्र पांच बोरी व 5 घरो से शुरुआत की गई थी। यह पहल अब पचास घरों तक पहुँच गई है। स्वयं सहायता समूह की महिलाएं स्वयं दूसरी महिलाओं को इसके लिए प्रेरित कर रही हैं एवं प्रशिक्षण दे रही हैं। वे लोग जिनके घर के किनारे थोड़ा–बहुत अनुपयोगी स्थान था उसमें भी बागवानी कर अपने घरों के लिए जैविक खाद के प्रयोग से सब्जियाँ उगा रही हैं।

"जब मैं सबसे पहले बोरे में बांस की कल्ली पर

मिला जो साथ...

ऐसा प्रायः समझा जाता है कि स्वयं सहायता समूह की भूमिका पैसे की लेन देन और आजीविका तक ही सीमित होता है। किन्तु 10 वर्षीय मीता (बदला हुआ नाम) जिसके पिता का देहान्त लगभग 1 वर्ष पूर्व टी.बी. की बिमारी से हो जाने के बाद इसकी मॉ भी मानसिक रूप से विक्षिप्तता की स्थिति में आ गई और उसे उसके मायके पहुॅचा दिया गया। पिता की मृत्यु, माता की विक्षिप्तता के पश्चात् मीता व उसके छोटे भाई राहुल देखरेख की पूरी जिम्मेदारी उसकी बूढ़ी दादी लक्ष्मीना पर आ गया। उसके बूढ़े व अशक्त हो चले दादा भी कुछ करने की स्थिति में नही थे। ऐसे में उसकी दादी किसी तरह मजदूरी करके पेट पालने का कार्य कर रही थी और प्रायः मजूदरी न मिलने पर उसे बच्चों के साथ भूखा भी सोना पड़ता था। इस बदहाल परिस्थिति के शिकार बच्चों के दर्द को समझा वहॉ के स्वयं सहायता समूह ने। सर्वप्रथम मंजू, गुड्डी आदि समूह की सक्रिय महिलाओं ने बच्चों की बदहाली को समूह के सामने रखा तो सभी सदस्यों ने सहयोग की सहमति जताई। सबसे पहले आवश्यकता थी मीता के उपचार और पोषण की। क्योंकि बिटिया को भी चिकित्सकों द्वारा तपेदिक की बीमारी बताई गई थी। अतिसंवेदित स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने बच्ची का न केवल नियमित जाँच व उपचार कराना शुरू किया है, बल्कि उनके पोषण की व्यवस्था भी समूह द्वारा ही सुनिश्चित की गई। इतना ही नही जाड़े में गर्म कपड़े की व्यवस्था हो या अन्य कोई भी मीता की सभी जरूरत पूरी करती है स्वयं सहायता समूह की महिलाएॅ। बात इससे भी आगे उनके प्रयास का उन सभी महिलाओं ने बैठक के दौरान जब दुर्घटना राहत कोष तथा अन्य सरकारी योजनाओं के बारे में जाना तो दिवंगत पिता औ विक्षिप्त मॉ की घटना को समाज कल्याण अधिकारी तक पहुॅचाते हुए बिटीया की मदद की गुहार लगाई। इस आवेदन का पूरा सम्मान दिया सन्त रविदास नगर भदोही के समाज कल्याण अधिकारी श्री रिंकू सिंह ''राही'' ने।

धैर्य और सूझबूझ की सफल कहानी

आज स्वयं सहायता समूह बनना बड़ा सरल और सहज सा लोगो के बीच महसूस होने लगा है लेकिन यह इस बात पर निर्भर करता है किसके द्वारा किस उद्देश्य, प्रक्रिया से और किनके बीच बनाया जा रहा है। हमारे गांव में ही जब श0रि0फा0–प्लान काम नहीं करती थी तो कहीं–कहीं से लोग आए और उन्होने अचानक बैठकें की और हम महिलाओं ने भी अबूझ प्रलोभन में आकर पैसे जमाकर उन लोगो को दे दिया। समूह बन खाता भी खुला लेकिन महिने दो महिने बाद वह टूट गया और न कोई जानने आया न कोई पूछने आया।

कुछ दिन बाद श0रि0फा0–प्लान के लोग आए और वो भी समूह बनाने की प्रक्रिया पर चर्चा किए तो दूध से जले छांछ से भी बचने वाले से हम हो गये और हम किसी भी सूरत में समूह बनाने को तैयार नहीं थे। उन लोगो के द्वारा भी हम महिलाओं को किसी प्रकार का कोई दबाव भी नहीं दिया गया। धीरे–धीरे आते जाते हमारा उनका रिश्ता बढ़ा फिर विश्वास और फिर आत्मबल। हमें उनके द्वारा पूरी प्रक्रिया बताई गई। छः माह तक हम महिलाओं ने अपने स्तर से पैसों का लेन–देन किया नियमित रुप से बैठक किया और जब हमें लगने लगा कि हम एक सशक्त समूह बन गये है और हमारा आपस में विश्वास है तब हमसब मिलकर बैंक में खाता खोलने के लिए गये लेकिन वहां जाकर तो हम दंग रह गये। तरह–तरह के सवाल किए गये। सवाल का जवाब तो हमारे पास तुरन्त था लेकिन कागजात लेकर कुछ दिन बाद बैंक मैनेजर के द्वारा बताये गये नियत तिथि पर पहुच गये। फिर बैंक मैनेजर एवं उनके कर्मचारियो के द्वारा अगले हफते अगले हफते करते महीने दो महीने और देखते ही देखते कई महीने बीत गये ।

एक दिन हमसब ने बैठक किया और इस बात पर चिन्ता जताई कि जब महिलाएं पहले प्रक्रिया से अन्जान थी किसी बाहरी व्यक्ति के बहकावे में आकर आनन–फानन में समूह बनाकर आनन–फानन में खाता

आज स्वयं सहायता समूह बनना बड़ा सरल और सहज सा लोगो के बीच महसूस होने लगा है लेकिन यह इस बात पर निर्भर करता है किसके द्वारा किस उद्देश्य, प्रक्रिया से और किनके बीच बनाया जा रहा है। हमारे गांव में ही जब श0रि0फा0–प्लान काम नहीं करती थी तो कहीं–कहीं से लोग आए और उन्होने अचानक बैठकें की और हम महिलाओं ने भी अबूझ प्रलोभन में आकर पैसे जमाकर उन लोगो को दे दिया। समूह बन खाता भी खुला लेकिन महिने दो महिने बाद वह टूट गया और न कोई जानने आया न कोई पूछने आया।

अमर उजाला

खाता न खोलने पर भड़कीं महिल

जौंटी रोड किया जाम, एसओ ने कराया समा

खाता खोलने का आश्वासन मिलने पर हुई श

आईडी पूफ के लिए कहा था: मैनेजर

कुछ दिन बाद श0रि0फा0–प्लान के लोग आए और वो भी समूह बनाने की प्रक्रिया पर चर्चा किए तो दूध से जले छांछ से भी बचने वाले से हम हो गये और हम किसी भी सूरत में समूह बनाने को तैयार नहीं थे। उन लोगो के द्वारा भी हम महिलाओं को किसी प्रकार का कोई दबाव भी नहीं दिया गया। धीरे–धीरे आते जाते हमारा उनका रिश्ता बढ़ा फिर विश्वास और फिर आत्मबल। हमें उनके द्वारा पूरी प्रक्रिया बताई गई। छः माह तक हम महिलाओं ने अपने स्तर से पैसों का लेन–देन किया नियमित रुप से बैठक किया और जब हमें लगने लगा कि हम एक सशक्त समूह बन गये है और हमारा आपस में विश्वास है तब हमसब मिलकर बैंक में खाता खोलने के लिए गये लेकिन वहां जाकर तो हम दंग रह गये। तरह–तरह के सवाल किए गये। सवाल का जवाब तो हमारे पास तुरन्त था लेकिन कागजात लेकर कुछ दिन बाद बैंक मैनेजर के द्वारा बताये गये नियत तिथि पर पहुच गये। फिर बैंक मैनेजर एवं उनके कर्मचारियो के द्वारा अगले हफते अगले हफते करते महीने दो महीने और देखते ही देखते कई महीने बीत गये ।

आज स्वयं सहायता समूह बनना बड़ा सरल और सहज सा लोगो के बीच महसूस होने लगा है लेकिन यह इस बात पर निर्भर करता है किसके द्वारा किस उद्देश्य, प्रक्रिया से और किनके बीच बनाया जा रहा है। हमारे गांव में ही जब श0रि0फा0–प्लान काम नहीं करती थी तो कहीं–कहीं से लोग आए और उन्होने अचानक बैठकें की और हम महिलाओं ने भी अबूझ प्रलोभन में आकर पैसे जमाकर उन लोगो को दे दिया। समूह बन खाता भी खुला लेकिन महिने दो महिने बाद वह टूट गया और न कोई जानने आया न कोई पूछने आया।

कुछ दिन बाद श0रि0फा0–प्लान के लोग आए और वो भी समूह बनाने की प्रकिया पर चर्चा किए तो दूध से जले छांछ से भी बचने वाले से हम हो गये और हम किसी भी सूरत में समूह बनाने को तैयार नहीं थे। उन लोगो के द्वारा भी हम महिलाओं को किसी प्रकार का कोई दबाव भी नहीं दिया गया। धीरे–धीरे आते जाते हमारा उनका रिश्ता बढ़ा फिर विश्वास और फिर आत्मबल। हमें उनके द्वारा पूरी प्रकिया बताई गई। छः माह तक हम महिलाओं ने अपने स्तर से पैसों का लेन–देन किया नियमित रुप से बैठक किया और जब हमें लगने लगा कि हम एक सशक्त समूह बन गये है और हमारा आपस में विश्वास है तब हमसब मिलकर बैंक में खाता खोलने के लिए गये लेकिन वहां जाकर तो हम दंग रह गये। तरह–तरह के सवाल किए गये। सवाल का जवाब तो हमारे पास तुरन्त था लेकिन कागजात लेकर कुछ दिन बाद बैंक मैनेजर के द्वारा बताये गये नियत तिथि पर पहुच गये। फिर बैंक मैनेजर एवं उनके कर्मचारियो के द्वारा अगले हफते अगले हफते करते महीने दो महीने और देखते ही देखते कई महीने बीत गये ।

एक दिन हमसब ने बैठक किया और इस बात पर चिन्ता जताई कि जब महिलाएं पहले प्रकिया से अन्जान थी किसी बाहरी व्यक्ति के बहकावे में आकर आनन–फानन में समूह बनाकर आनन–फानन में खाता भी खुल गया। अब जबकी हम पूरी प्रक्रिया से वाकिफ हुए और प्रक्रिया के साथ खाता खुलवाने गये तो हमें इतना परेशानी क्यों ? इस सवाल के उत्तर तो बहुत आए लेकिन उस पर चर्चा नही की जाए तो अच्छा

संघे शक्ति

स्वयं सहायता की जब भी बात चलती है तो लोगो का अनुमान पैसों की लेन–देन तक ही सिमित होता है। जबकि सच कहे तो यह जीवन के हर एक क्षेत्र में बढ़ने का मार्ग होता है। हमें कुछ अच्छा करने और सोचने का अवसर देता है साथ ही साथ चुनौतियों से लड़ने का बल देता है। हमारे गांव में हम दलित बस्ती के अलावा अन्य हर जाति एवं धर्म के निवासी रहते है और सबके अपने–अपने व्यवसाय है।हमारे गांव का प्रमुख व्यवसाय खेती है। बडे लोगो के पास तो खेत है लेकिन हम मजदूरों का श्रम। बीज बोने से लेकर निराने,काटने और ढ़ाने तक का सब काम हम मजदूर

औरतों को करना पड़ता था जिसके एवज में हमें मात्र दिन भर का अनाज चार किलो अनाज मात्र मिलता था। महंगाई बढ़ी तो भुखमरी तक की स्थिति का सामना हमें करने की नौगत आ गई। बार–बार अपनी मजदूरी बढ़ाने का अनुरोध हम अलग–अलग करते रहे लेकिन कोई क्यों सुनता।

एक दिन हमारे ममूह की बैठक हुई तो यह बात निकलकर आई जिसमें सबका दुखड़ा एक फिर पहल एक क्यों नहीं ? यानि की समस्या जब सभी की एक है तो हम एक साथ मिलकर बात क्यों नहीं करते है

इस बात पर हमसब ने मिलकर चर्चा किया। आधे से ज्यादा लोग बैठक से उठकर यह कहकर जाने लगी कि जो मिल रहा है वो भी बन्द न हो जाए। लेकिन मैने हार न मानने की ठान लिया था और अपने समूह की हर बैठक में इस बात को उठाया कि हमारी मजदूरी क्यों हनी बढ़ रही है और हम सकसाथ मिलकर मांग क्यों नहीं करते हैं ?

लगातार बातचीत के बाद यह तय हुआ कि कोई भी काम कराने या बुलाने आएगा तो हमसब मिलकर उससे यह बात करेंगे कि पूरी मजदूरी, पूरा काम। यानि कि हमारा दिन भर की मजदूरी बढ़ाई जाए और ऐसा ही हुआ जब एक खेत के मालिक हमलोगों को बुलाने आए तो हमसब ने मिलकर के एक साथ सीधे ना कह दिया । मेरे गांव में बड़े लोगो के बीच यह बात हवा की गति से भी तेज फैल गई और बस फिर क्या था हमें तरह–तरह से ये सुनने को मिलने लगा कि बैठे अपने घर ? कहा ये लाएंगी खाने को। एक बार तो हमारे घर के आदमियों का दबाव हमपर पड़ने लगा कि घर पर बैठकर खाने से अच्छा है कि जो मिले उसपर काम कर लो। लेकिन हम अपनी बात पर अड़े रहे, डिगे नहीं चाहे कितना ही जोर–दबाव क्यों न पड़ा। हफता–10 दिन और 15 दिन बीत गये हमारे गांव और समूह से अलग दूसरी महिलाएं टूट कर काम पर वापस चली गई लेकिन हमसब थे की हार मानने वाले नहीं। हमसब मिलकर उनके पास गये और इस बात के लिए उन्हें राजी किया कि हमारे बस्ती एवं समूदाय की इस अनेकता के कारण ही लोग हमारा दुरुपयोग करते है और हमारी ताकत को नहीं समझते है। हमसब मिलकर उनके पास गये और ये कहकर चले आए कि जो हमारे इस मुहिम में शामिल नहीं होगा उनसे हमारा किसी प्रकार का नाता नहीं होगा। बात का असर हुआ और कोई भी काम पर न लौटा फिर क्या था खेत मालिक हमारे घर और हम अपनी शर्तो को रखने लगे। आज हमें पूरा तो नहीं लेकिन चार से छः किलो अनाज तो मिलना शुरु हो गया है। हम यह कहना चाहते है कि सब मिलकर अगर बड़े स्तर पर सही मांग सही समय पर और सही तरिके से करे तो जीत जरुर हमारी होती है।

हर गांव में अगर उपलब्ध हो जाए ऐसे रोजगार के अवसर

हमारे गांव त्रिलोकपुर में जब एक वर्ष पहले जब स्वयं सहायता समूह के निर्माण की प्रक्रिया चल रही थी उस दौरान समुदाय की महिलाओं के द्वारा तरह तरह के सवाल समूह निर्माण से सम्बन्धित आ रहे थे जैसे बहुत से दूसरे लोग आए और आनन–फानन में स्वयं सहायता समूह बनाकर चले गये। उसका कोई लाभ हम महिलाओं को तो मिला नहीं न रोजी–रोजगार। तब वास्तव में श.री.फा./प्लान को भी समूह का गठन और उनके रोजगार के अवसर की उपलब्धता एक चुनौती के रुप में सामने उभर कर दिखाई है। इस दौरान स्वयं सहायता समूहों का एक एक्सपोजर विजिट अन्य संस्था में कराया गया वहाँ महिलाओं ने महिलाओं के द्वारा किए जा रहे विभिन्न पहल को न केवल देखा बल्कि उससे कुछ ज्यादा कर गुजरने की तमन्ना लेकर गांव वापस आई। उनकी मांग पर उन्हें वाशिंग पाउडर निर्माण प्रक्रिया प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण के दौरान कच्चे माल के नाम व उनकी संख्या, उनकी तौल को जहाँ याद कराना चुनौती भरा काम था वहीं इसकी खरीददारी करने में स्वयं महिलाएं सक्षम बनें यह भी अपने आप में एक बड़ा लक्ष्य था। किन्तु सतत प्रयास के साथ यह सबकुछ सम्भव हुआ। प्रशिक्षण के पश्चात शुरु–शुरु में ये महिलाएं छोटे स्तर पर निर्माण कार्य में लगीं और अपने गांव स्तर पर ही

हमारे गांव त्रिलोकपुर में जब एक वर्ष पहले जब स्वयं सहायता समूह के निर्माण की प्रक्रिया चल रही थी उस दौरान समुदाय की महिलाओं के द्वारा तरह तरह के सवाल समूह निर्माण से सम्बन्धित आ रहे थे जैसे बहुत से दूसरे लोग आए और आनन–फानन में स्वयं सहायता समूह बनाकर चले गये। उसका कोई लाभ हम महिलाओं को तो मिला नहीं न रोजी–रोजगार। तब वास्तव में श.री.फा./प्लान को भी समूह का गठन और उनके रोजगार के अवसर की उपलब्धता एक चुनौती के रुप में सामने उभर कर दिखाई है। इस दौरान स्वयं सहायता समूहों का एक एक्सपोजर विजिट अन्य संस्था में कराया गया वहाँ महिलाओं ने महिलाओं के द्वारा किए जा रहे विभिन्न पहल को न केवल देखा बल्कि उससे कुछ ज्यादा कर गुजरने की तमन्ना लेकर गांव वापस आई। उनकी मांग पर उन्हें वाशिंग पाउडर निर्माण प्रक्रिया प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण के दौरान कच्चे माल के नाम व उनकी संख्या, उनकी तौल को जहाँ याद कराना चुनौती भरा काम था वहीं इसकी खरीददारी करने में स्वयं महिलाएं सक्षम बनें यह भी अपने आप में एक बड़ा लक्ष्य था। किन्तु सतत प्रयास के साथ यह सबकुछ सम्भव हुआ। प्रशिक्षण के पश्चात शुरु–शुरु में ये महिलाएं छोटे स्तर पर निर्माण कार्य में लगीं और अपने गांव स्तर पर ही इसकी बिक्री शुरु की। मेहनत और रुचि के साथ अब अपने घरो से निकलकर कार्यक्षेत्र के अन्य समूह की महिलाओ तक इनके द्वारा स्वनिर्मित वाशिंग पाउडर धीरे–धीरे पहुँचने लगा है और उनके

कार्य सम्भव नही था क्योंकि यह सब जानते है कि महिला व पुरुष मिलकर आगे बढ़ते है तो यह बढ़ोत्तरी स्थायी बन सकती है बिना किसी विवाद और संकट के।"

समूह बना आत्मनिर्भरता का आधार

जब मेरे गांव में समूह बना था तो बातो ही बातो में मै भी उसकी एक सदस्य बन गई लेकिन मुझे विश्वास नहीं था कि समूह में इतनी शक्ति होती है। जब मेरे गांव की महिलाओ ने सर्फ बनाने का काम शुरु किया तो हंसी–हंसी में मेरे मुंह से निकला कि चलो मैं एक दुकान खोल लेती हूं। सबसे पहले मेरी बात को मेरे समूह की दोस्तो ने पूरा पूरा सम्मान दिया और दुकान के लिए उधार की बात भी मान ली गई। खुशी–खुशी मै घर गई और अपने इस सफल व्यवसाय के सपने को सभी को सुनाया। उत्साह के बजाय तड़ातड़ सवालो

की बरसात होने लगी। क्या सामान बेचोगी ? कहां से लाओगी ? कौन खरिदेगा ? इत्यादि। फिर दूसरे दिन मैंने समूह की महिलाओं को बुलाकर अपना दुखड़ा सुनाया तो सबने अपना साथ जताया और पूरा–पूरा ढांढ़स बंधाया। बेचेंगे क्या !! अरे नून, तेल, साबून और रोजमर्रा की छोटी–मोटी चीजें तथा बच्चों के पसन्द की चाकलेट, टोस्ट, नमकिन आदि। खरिदेगा कौन !! कम से कम हमारे बस्ती ए और बी के कुल मिलकार 25

परिवार। कैसे लाएंगे हम सामान खरीदकर ? उत्तर में मिला की जाएंगी सखियां हमारे साथ।

इस तरह तो सपने हमने बुने और उनमें सखियों का साथ मिला । 2000 रुपये की पूंजी से शुरु हुई दुकान 10,000/– तक पहुच चुकी है और धीरे–धीरे बढ़ती ही जा रही है। लेकिन मेरी ताकत मेरे समूह की सखियां है जिन्होंने ये तय किया की धीरे–धीरे हमारे समूह की हर एक सदस्य आर्थिक स्वावलम्बन से जुड़ जाएगी और हमसब का ये भी निर्णय है की हमारे समूह की कोई महिला अगर कोई व्यवसाय करती है तो सब के सब उसी से खरिददारी करेंगे, दूसरा कोई विकल्प गांव में न हो। इस प्रकार धीरे–धीरे जिन्दगी से जुड़ी आवश्यकताओं को अपने काम से जोड़ते हुए आर्थिक स्वावलम्बन को सुनिश्चित करते हुए हम आगे बढ़ रहे हैं।

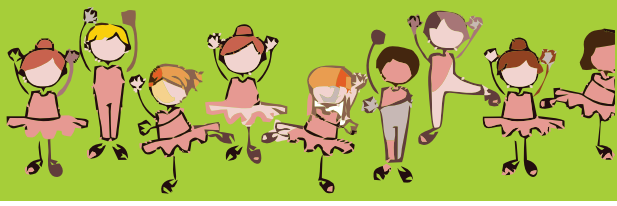

एक कोशिश ऐसी भी...

हमारे गांव अनाज बैंक हम समूह की महिलाओ के द्वारा चलाया जाता है। जिसके तहत हम सभी समूह की महिलाएं हर फसली अनाज, फसल के अनुसार इकट्ठा करके लगभग एक क्वीन्टल से लेकर दो क्वीन्टल तक रखते हैं। जिसका उपयोग कई तरिको से करते है। पहला अगर कोई परिवार किसी आपदा का शिकार हो जाता है, दूसरा अगर किसी परिवार में कोई आयोजन पड़ता हो तो उसे अनाज सस्ते दर में उपलब्ध कराया जाता है और तीसरा यदि कोई विशेष परिस्थितियां नहीं पड़ती तो मौसम बितने के बाद जब संग्रहित अनाज का मूल्य बढ़ जाता है तो बढ़े दर पर अनाज को बेचकर मुनाफा आपस में बांट लेते हैं। माह अप्रैल में मेरे गांव में शादी पड़ी। वह परिवार बहुत गरीब और खर्चा बड़ाया, हमें भी चावल की जगह पर गेंहू भरना था। जिसके घर में बेटी का व्याह था उनके द्वारा जब हमारे समूह की महिलाओ से कुछ पैसे उधार मांगे गये तो हमने चूकिं वह समूह के बाहर के सदस्य थे तो उन्हें पैसे उधार न दिए जाने के नियम को बताया किन्तु उनकी परिस्थितियों को देखते हुए हम सब ने उनकी मदद करने का मन बना लिया। हम लोंगो ने उन्हें रास्ता सुझाया कि यदि वो चाहे तो अपनी आवश्यकता के अनुसार चावल ले लें और

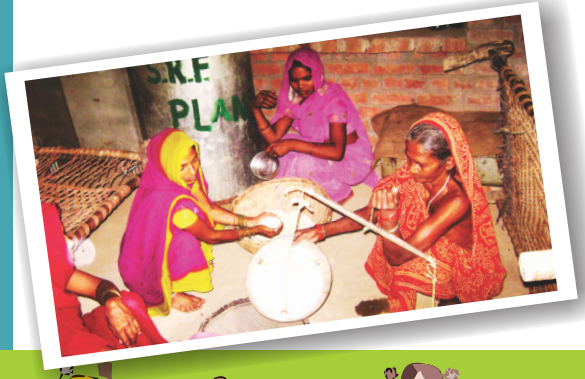

उसके पैसे किस्तों में हमें चुका देंगे। उनके लिए हमारी यह मदद बहुत बड़े सहयोग के रुप में दिखने लगी। पूरे परिवार ने हमारे समूह को धन्यवाद दिया और बेटी की शादी में हमारे सहयोग को शामिल किया। जिसके कारण वे बनिया से कर्ज चावल लेने से बच गये और उनपर ऐसा कोई दबाव भी नहीं था की तुरन्त उधारी देनी है। मै अपनी इस गांव की कहानी द्वारा ये बताना चाहती हूं कि किसी गांव में अगर कोई भी पहल शुरु किए जाने की बात आए तो उसे दिल से सुनना चाहिए और सही लगने पर करना चाहिए और उससे भी बड़ी बात की उसको सही समय पर उपयोग में लाना चाहिए।

पुर्ननिर्माण

ग्राम कंसापुर की संकठा स्वयं सहायता समूह बच्चों के शिक्षा, उनकी मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता को लकर जहॉ सतत् प्रयास करता रहा है वहीं वर्षो से जर्जर पड़ा प्राथमिक विद्यालय के पुर्ननिर्माण की मांग को भी लगातार उठाया। जब भी कोई अधिकारी विद्यालय में आता तो समूह की सदस्या सूचना पाते ही तत्काल वहॉ पहुॅच जाती और जर्जर विद्यालय और आस–पास के विपरीत परिस्थितियों से अवगत कराती।

दरअसल कंसापुर प्राथमिक विद्यालय इस तरह से जर्जर अवस्था में आ चुका था कि कभी भी कोई भी दीवार गिर सकती थी और इतना ही नहीं बरसात

होते ही उपर से छत से वहाँ पानी टपकने लगता था वहीं चारो तरफ गड्ढे का पानी स्कूल के भीतर समा जाता था। बच्चे इस कदर असुरक्षित थे कि कभी भी कोई बड़ी दुर्घटना घट जाने की संभावना लगातार बनी हुई थी। समूह की शान्ति, उषा व सोमारी को इस बदहाल विद्यालय में बच्चों की असुरक्षा की सम्भावना ने इस कदर बेचैन उन्होंन की वे हर स्तर पर इस सन्दर्भ में आवेदन किए। जिले से लेकर राष्ट्रीय बाल संरक्षण आयोग तक। आखिरकार समूह के प्रयास से विद्यालय का पुननिर्माण शुरू हो गया है और जल्द ही आने वाले सत्र में बच्चे अपने नवनिर्मित विद्यालय में पढ़ेंगे।

जब मास्टर जी ने फीस वापस किया

गॉव–गॉव में बैंठके करके हम महिलाओं को शिक्षा अधिकार अधिनियम के तहत प्राप्त सभी सुविधाओं व प्रावधानो के प्रति जागरूक किया गया। जिसमें मुख्य–मुख्य बातें जो हम स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को समझ में आया, वह यह कि 6 से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को निशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान सभी विद्यालयो में किया गया है। किसी भी प्रकार का शुल्क किसी भी विद्यार्थी और अभिभावक द्वारा विद्यालय को देय नहीं होगा। लेकिन हमारे गॉव के कुछ विद्यालयों में लगातार यह सूचना मिल रही थी कि शिक्षा के अधिकार अधिनियम के तहत भले ही निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान है, बावजूद इसके तरह–तरह के नामो से शुल्क लिए जा रहे है। ऐसा ही मेरे गॉव के विद्यालय में कुछ बच्चे जो पढ़ने जाते थे, उन्होनें अपने अभिभावको से फीस उगाही की बात कही। समूह बैठक के दौरान इस पर गहन चर्चा हुई की क्यों न हम समूह के सदस्य स्कूल जाकर सम्बन्धित अध्यापक से आपत्ति दर्ज करें। हम सभी महिलाएँ नियोजित तरीके से नियत समय पर स्कूल पहुँचे, और फीस लिए जाने की शिकायत अध्यापक से की। सबसे पहले अध्यापक ने हम महिलाओं को डाट फटकार कर वापस भेजने प्रयास किया तथा कहा कि तुम लोग जाहिल गँवार हो, गलत सूचना पर लड़ने चली आती हो, और हमारे स्कूल में कोई शिक्षण शुल्क नही लिया गया है। विद्यालय प्रबन्धन शुल्क लिया गया है। तुम लोग को जो करना है वो कर लो। इस पर हम महिलाएँ लाचार और विवश से हो गई। तब हम

लोग अपने गाँव के युवा सदस्यों को फोन किए और वो अपने पास रखे उस पम्प्लेट को तत्काल साथ में लेकर हमारे पास आए जिसमें शिक्षा अधिकार अधिनियम के विषय में विस्तृत रूप से लिखा था। पम्प्लेट मास्टर को दिखाया और हमने कहा कि इसमें जो नियम कानून बताए गए है क्या यह सब गलत है? क्या इसकी शिकायत हम दूरभाष से आपके उच्च अधिकारियों से करें? अचानक मास्टर जी के तेवर बदल गए और उन्होंने माफी मांगी और लिए गए शुल्क को जैसे–तैसे एकत्र करके हम सब महिलाओं को वापस किया।

अम्बेडकर स्वयं सहायता समूह
बसन्तापुर

डॉ. शम्भुनाथ सिंह रिसर्च फाउण्डेशन (श.रि.फा.) एक वैचारिक रूप से स्वतंत्र गैर-सरकारी संस्था है, जो समुदाय में वंचितों के सर्वांगीण विकास हेतु वचनबद्ध है। श.रि.फा. जनकल्याणकारी, अलाभकारी, गैर राजनीतिक संस्था के रूप में सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट-1860 की धारा 21 (8) के अन्तर्गत, आयकर की धारा 12 ए एवं 80 जी तथां एफ.सी.आर.ए. के अन्तर्गत पंजीकृत है। संस्था उ0प्र0 के वाराणसी, चन्दौली, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर एवं लखनऊ जिलों में बाल-अधिकार, महिला सशक्तिकरण, सामुदायिक स्वास्थ्य एवं प्रजनन, बाल स्वास्थ्य, एच.आई.वी./एड्स, ट्रैफिकिंग, शहरी गरीबी एवं मानवाधिकार आदि मुद्दों पर सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं स्वयं सेवकों के साथ लक्ष्यित समूह के परस्पर विश्वास के साथ सर्वांगीण विकास एवं पैरोकारी की तरफ निरन्तर अग्रसर एवं प्रयासरत् है।

डॉ. शम्भुनाथ सिंह रिसर्च फाउण्डेशन

सी. 14/160 बी-2, डा. शम्भुनाथ सिंह मार्ग
सोनिया, वाराणसी-221 010 (उत्तर प्रदेश)
टेलेफैक्स-0542-2414161, मो. 9415204049
ईमेल : sharifa54@gmail.com
वेबसाइट www.srf.org.in